

कार्यकारिणी संक्षेप

1.0 परियोजना विवरण

1.1 परिचय

मैसर्स लाफार्ज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (एल.आई.पी.एल.) फ्रेंच निर्माण सामग्री, मेजर लाफार्ज की सहायक कंपनी है। लाफार्ज विश्व में निर्माण सामग्री में अग्रणी है, एवं अपने सभी व्यापार जैसे सीमेन्ट, एग्रीगेट्स, कंक्रीट एवं जिप्सम में उच्च श्रेणी पर है।

लाफार्ज ने भारतीय मार्केट में टाटा स्टील के सीमेंट व्यापार के अधिग्रहण के साथ सन् 1999 में प्रवेश किया, इसके बाद सन् 2001 में रेमण्ड सीमेंट को खरीदा।

एल. आई. पी. एल. का उपस्थित सीमेंट संयंत्र लाफार्ज अरसमेटा सीमेंट संयंत्र (ए.सी.पी.) के नाम से है, जो कि 1982 में स्थापित हुआ था एवं उसकी उपस्थित उत्पादन क्षमता 1.6 मिलियन टन प्रतिवर्ष क्लिकर है। कंपनी ने अब क्लिकर उत्पादन क्षमता - (1.6 से 3.2 मिलियन टन प्रतिवर्ष) एवं सीमेंट उत्पादन क्षमता (2.2 से 4.8 मिलियन टन प्रतिवर्ष) में विस्तार प्रस्तावित की है।

वर्तमान में, चूना पत्थर (मौजूदा क्षमता के लिए) तीन मौजूदा कैप्टिव चूना पत्थर खानों से लिया जाता है (अरसमेटा चूना पत्थर खान (503.817 हैक्टेयर), किरारी चूना पत्थर खान (167.048 हैक्टेयर) एवं चूना पत्थर खान, अरसमेटा (46.292 हैक्टेयर) जिसके लिए पर्यावरणीय अनापत्ति एवं सहमती क्रमशः 'पर्यावरण एवं वन मंत्रालय' एवं सी.पी.सी.बी. द्वारा प्राप्त की गई है।

सीमेंट संयंत्र के लिए -चूना पत्थर का प्रमुख स्रोत अरसमेटा खान है, जिसकी उत्पादन क्षमता 2.7 मिलियन टन प्रतिवर्ष है। चूंकी अरसमेटा चूना पत्थर खान बहुत पुरानी है एवं इसके भंडार घट रहे हैं, इसलिए चूना पत्थर के नये स्रोत की जरूरत पड़ी। एल.आई.पी.एल. ने अरसमेटा सीमेन्ट संयंत्र का विस्तार (क्लिकर 1.6 से 3.2 मिलियन टन प्रतिवर्ष एवं सीमेन्ट 2.2 से 4.8 मिलियन टन प्रतिवर्ष तक) प्रस्तावित किया है। मौजूदा सीमेंट संयंत्र के लिए चूना पत्थर की कमी को पूरा करने के लिए एवं प्रस्तावित सीमेन्ट संयंत्र की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए लाफार्ज ने नई कैप्टिव चिल्हाटी चूना पत्थर खान प्रस्तावित की है, जो कि सीमेंट प्लांट से 25 कि.मी. की दूरी पर है एवं तहसील-मस्तूरी, जिला-बिलासपुर (छत्तीसगढ़) के 11 ग्रामों में पड़ती है।

पर्यावरणीय प्रभाव आंकलन अधिसूचना दिनांक 14 सितम्बर 2006, 1 दिसम्बर 2009 के संशोधन के अनुसार, यह परियोजना श्रेणी-अ क्रमांक 1(अ)-3 में आती है।

1.2 परियोजना का विवरण

सारणी - 1

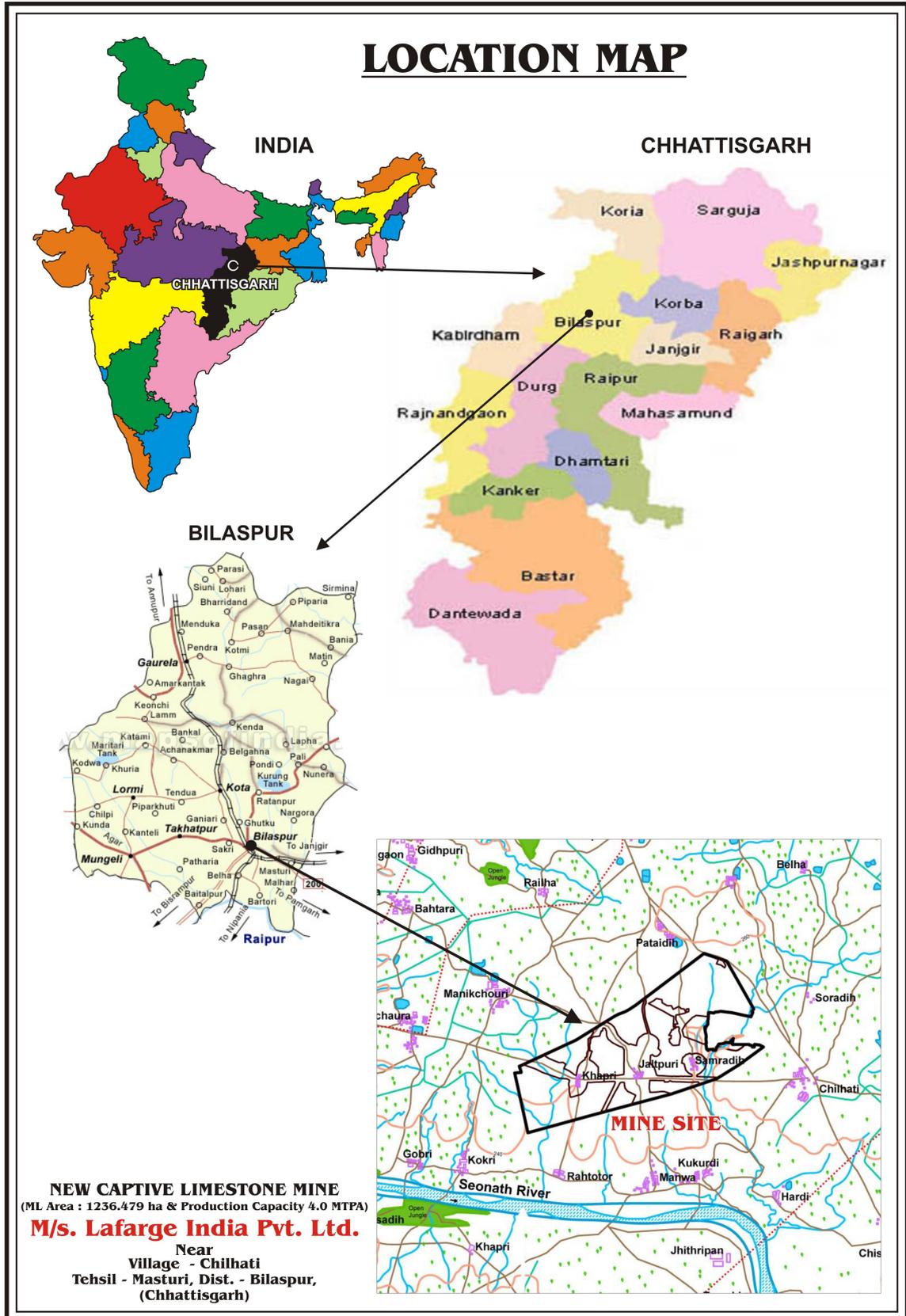
क्र. सं.	विशेष	विवरण
1.	परियोजना की प्रकृति	खनन परियोजना
2.	परियोजना का आकार	
2.1	खनन पट्टा क्षेत्र	1236.479 हैक्टेयर सरकारी भूमि - 220.984 हैक्टेयर निजी भूमि - 1015.495 हैक्टेयर
2.2	प्रस्तावित उत्पादन क्षमता	4.0 मिलियन टन प्रतिवर्ष
3.	परियोजना स्थान	
3.1	ग्राम	11 ग्राम : चिल्हाटी, जैतपुरी, सेमहारदीह, पताईदीह, महुआदीह, मनवा, राहततोर, खापरी, बेलपान (कुकरदीह), सालहेघोरी, कोकारी

नई कैप्टिव चूना पत्थर खान (खनन पट्टा क्षेत्र 1236.479 हैक्टेयर) 4.0 मिलियन टन प्रति वर्ष उत्पादन क्षमता के साथ निकट ग्राम-चिल्हाटी, तहसील-मस्तूरी, जिला बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

ई. आई. ए. रिपोर्ट का कार्यकारिणी संक्षेप

3.2	तहसील	मस्तूरी
3.3	जिला	बिलासपुर
3.4	राज्य	छत्तीसगढ़
3.5	अक्षांश	21° 45' 57.11" से 21° 48' 38.15" उत्तर
3.6	देशांतर	82° 13' 42.60" से 82° 17' 47.33" पूर्व
3.7	टोपोग्रीट संख्या	64 के/1, 64 के/2, 64 के/5 एवं 64 के/6
4.	परियोजना स्थल के आस पास का विवरण	
4.1	निकटतम ग्राम	चिल्हाटी (प्रस्तावित खान से लगभग 1.2 कि.मी. पूर्व-दक्षिण-पूर्व दिशा में)
4.2	निकटतम कस्बा	मस्तूरी (प्रस्तावित खान से लगभग 20 कि.मी. उत्तर दिशा में)
4.3	निकटतम राष्ट्रीय राजमार्ग	एन.एच. 200 (प्रस्तावित खान से लगभग 15 कि.मी. उत्तर-उत्तर- पूर्व दिशा में)
4.4	निकटतम रेलवे स्टेशन	निपानिया (प्रस्तावित खान से लगभग 21 कि.मी. पश्चिम उत्तर पश्चिम दिशा में)
4.5	निकटतम हवाई अड्डा	रायपुर (प्रस्तावित खान से लगभग 85 कि.मी. दक्षिण – पश्चिम दिशा में)
4.6	पारिस्थितिकी संवेदनशील क्षेत्र (राष्ट्रीय उद्यान, वन्यजीव अभ्यारण्य, जैविक भंडार, इत्यादि)	प्रस्तावित खान क्षेत्र के 10 कि.मी. त्रिज्या में कोई नहीं
4.7	आरक्षित/संरक्षित वन (10 कि.मी क्षेत्र में)	<ul style="list-style-type: none"> ■ मोहतारा आरक्षित वन (पट्टा क्षेत्र के दक्षिण – पश्चिम कोने से लगभग 8.4 कि.मी. दक्षिण – पश्चिम दिशा में) ■ सोनबरसा आरक्षित वन (पट्टा क्षेत्र के दक्षिण – पश्चिम कोने से लगभग 9.1 कि.मी. दक्षिण – पश्चिम दिशा में)
4.8	निकटतम नदी	शिओनाथ नदी (प्रस्तावित खान क्षेत्र से लगभग 1.5 कि.मी. दक्षिण –दक्षिण – पश्चिम दिशा में)
4.9	पुरातात्विक महत्वपूर्ण स्थल (10 कि.मी. क्षेत्र की त्रिज्या में)	<ul style="list-style-type: none"> ■ मलहार किला (प्रस्तावित खान क्षेत्र से लगभग 9.4 कि.मी. उत्तर दिशा में) ■ पाटलेश्वर महादेव मंदिर आसपास के मंदिरों के सभी प्राचीन अवशेषों सहित (प्रस्तावित खान क्षेत्र से लगभग 9.2 कि.मी. उत्तर दिशा में)
4.10	भूकंपीय क्षेत्र	क्षेत्र. II (आई. एस. 1893 पार्ट- I : 2002 के अनुसार)
5.	लागत विवरण	
5.1	परियोजना की कुल लागत	रुपये 145.00 करोड़
5.2	पर्यावरण संरक्षण के उपायों के लिए लागत	कुल लागत – रुपये 8.0 करोड़ आवर्तक लागत – रुपये 1.0 करोड़/प्रतिवर्ष
6.	परियोजना के लिए आवश्यकताएँ	
6.1	भूमि की आवश्यकता	1236.479 हैक्टेयर
6.2	जल की आवश्यकता	150 किलो लीटर प्रतिदिन स्त्रोत : बोर वेल एवं माइन्स सम्प में संरक्षित वर्षा जल
6.3	श्रम शक्ति की आवश्यकता	130 व्यक्ति

1.3 लोकेशन मेप



2.0 खान का विवरण

2.1 खनन पट्टा की स्थिति

कुल खनन पट्टा क्षेत्र 1236.479 हैक्टेयर है। छत्तीसगढ़ राज्य सरकार ने अपने पत्र क्रमांक एफ 3-86/2007/12 (2), दिनांक 7 दिसम्बर, 2009 द्वारा मैसर्स लाफार्ज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड को एल. ओ. आई. प्रदान किया।

2.2 खनन का वर्णन

सारणी-2.0

क्र.सं.	विशेष	विवरण
1.	खनन की प्रक्रिया	ओपनकास्ट फुल्ली मैकेनाइज्ड
2.	प्रतिवर्ष प्रस्तावित उत्पादन	4.0 मिलियन टन प्रतिवर्ष (खनन योजना अवधि के 5वें वर्ष में पूरा करना प्रस्तावित)
3.	कुल खनन योग्य भण्डार	129.69 मिलियन टन
4.	खान की आयु	35 वर्ष
5.	बेंच की संख्या	4
6.	बेंच की ऊँचाई	8 मीटर
7.	बेंच की चौड़ाई	<ul style="list-style-type: none"> ■ कार्यशील बेंच - 30 मी. ■ अंतिम बेंच चौड़ाई - 6 मी.
8.	ऐलिवेशन रेंज	226 एम.आर.एल. - 250 एम.आर.एल.
9.	सामान्य भू-स्तर	238 एम.आर.एल.
10.	भू-जल स्तर	पूर्व मानसून - 40 मीटर भूमि स्तर से नीचे (198 एम.आर.एल.) पश्च मानसून - 35 मीटर भूमि स्तर से नीचे (203 एम. आर .एल.)
11.	अंतिम कार्य गहराई (खान आयु की समाप्ति पर)	पिट संख्या 1 व 2 = 32 मीटर (भूस्तर से) पिट संख्या 3 = 26.8 मीटर (भूस्तर से)
12.	सामान्य पिट स्लोप	45°
13.	स्ट्रीपिंग रेशो	1 : 0.10
14.	कार्य दिवसों की संख्या	300 दिन
15.	प्रतिदिन पारियों की संख्या	2
16.	प्रथम पाँच वर्षों के अंत पर उत्पन्न कुल अपशिष्ट पदार्थ	कोई ओवरवर्डन या साइड बर्डन उत्पन्न होने की संभावना नहीं है। केवल शीर्ष मिट्टी उत्पन्न होगी (1.68 मिलियन क्यूबिक मीटर)
17.	खान आयु कि समाप्ति पर उत्पन्न कुल अपशिष्ट पदार्थ	केवल शीर्ष मिट्टी 6.7 मिलियन क्यूबिक मीटर उत्पन्न होगी

स्रोत :- खनन योजना एवं प्रोग्रेसिव माइन क्लोजर प्लान

2.3 खनन की प्रक्रिया

खनन पूरी तरह से ओपनकास्ट मैकेनाइज्ड प्रक्रिया द्वारा होगा जिसमें उपलब्ध चूना पत्थर भण्डार को निकालने के लिए भण्डार कि उचित बेंचिंग के साथ भारी अर्थ मूविंग उपकरणों, गहरे छिद्र ड्रिलिंग एवं नियंत्रित विस्फोटक तकनीक का उपयोग किया जायेगा।

खान क्षेत्र में ही खनिज की पिसाई की जायेगी एवं पिसे हुए चूना पत्थर को सड़क/रेल/कवर्ड कंवेयर बेल्ट द्वारा सीमेंट संयंत्र में स्थानांतरित किया जायेगा।

2.4 खनन परियोजना के लिए उपयोगिता एवं आवश्यकता

2.4.1 यंत्रीकरण का विस्तार

सारणी - 3

क्र.सं.	उपकरण नाम	संख्या
1.	ड्रिलिंग मशीन	6
2.	एक्सकेवेटर	5
3.	डम्पर	11
4.	डोजर	2
5.	रोक ब्रेकर	1
6.	पोर्टेबल कम्प्रेसर	5
7.	वेगन ड्रिल पर कम्प्रेसर	2
8.	पानी का टैंकर	2
9.	विस्फोट वैन	1
10.	डिवाट्रिंग पम्प	6

स्रोत :- खनन योजना एवं प्रागैसिव माइन क्लोजर प्लान

2.4.2 जल की आवश्यकता

प्रस्तावित खनन परियोजना के लिए कुल 150 किलो लीटर प्रतिदिन पानी की आवश्यकता होगी।

सारणी - 4

जल की आवश्यकता	मात्रा (किलो लीटर प्रतिदिन)	स्रोत
वृक्षारोपण	20	बोर वेल एवं माइन्स सम्प में संरक्षित वर्षा जल
क्रशिंग प्लांट	20	
धूल दमन	80	
घरेलू	20	
अन्य	10	
कुल	150	

स्रोत : खनन योजना एवं प्रागैसिव माइन क्लोजर प्लान

2.4.3 श्रम शक्ति की आवश्यकता

प्रस्तावित खनन परियोजना के लिए लगभग 130 लोगों की आवश्यकता होगी। एल.आई.पी.एल. राज्य सरकार की औद्योगिक नीति एवं पुर्नवास नीति के अनुसार स्थानीय लोगों को रोजगार प्रदान करेगा।

3.0 पर्यावरण का विवरण

अध्ययन क्षेत्र का आधारभूत अध्ययन शीत ऋतु के मौसम (दिसम्बर 2010 – फरवरी 2011) में किया गया।

सभी 8 ए. ए. क्यू. एम. स्टेशनों पर PM₁₀ की सांद्रता 42.8 – 66.2 माइक्रोग्राम/घनमीटर SO₂ की सांद्रता 5.5 से 8.4 माइक्रोग्राम/घनमीटर एवं NO₂ की सांद्रता 11.7 से 17.6 माइक्रोग्राम/घनमीटर पाई गई।

सभी 6 स्थानों पर भूमी जल विश्लेषण से पाया गया कि pH 7.14 – 7.62 तक, कुल कठोरता 243 मिलिग्राम/लीटर से 344 मिलिग्राम/लीटर व कुल घुलित ठोस 410 मिलिग्राम/लीटर से 556 मिलिग्राम/लीटर तक है।

मृदा के विश्लेषण के परिणाम से ज्ञात हुआ है कि मृदा कुछ-कुछ क्षारीय प्रकृति कि है क्योंकि pH 7.28 से 7.48 एवं मृदा संरचना सिल्ट क्ले है। मृदा में नाइट्रोजन, फास्फोरस, व पोटेशियम की सांद्रता अच्छी मात्रा में पायी गयी है।

3.1 जैविक पर्यावरण

वनस्पति :- इस क्षेत्र में मुख्य रूप से पायी जाने वाली प्रजातियां है – आम (मेग्नीफेरा इंडिका), शीशम (डेलबर्जिया सिसु), कदम्ब (एन्थोसिफेलस कदम्ब), बबूल (एकेशिया निलोटिका), खैर (एकासिया कटैचू), आँवला (इम्बलिका ऑफिसिनेलिस) इत्यादि।

जीव-जंतु :- इस अध्ययन क्षेत्र में सामान्यतः पाए जाने वाले जीव-जंतु है – कोयल (यूडायनमस प्रजाती), खरगोश (लेपस निग्रीकोलिस), कॉमन गार्डन लिजार्ड (कोलोटस वेसीकलर), चूहा (आर. रेट्स), ब्रह्मी मैना (स्टर्नस पेगोडोरम), घरेलू कौवा (कोरवस स्प्लेन्डंस), गिलहरी (पयुनेमब्यूलस पालनेरम) इत्यादि।

3.2 सामाजिक – आर्थिक पर्यावरण

भारतीय जनगणना 2001 के अनुसार, अध्ययन क्षेत्र (10 किमी. त्रिज्या) की जनसंख्या 78699 है। अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या का 23.94 प्रतिशत अनुसूचित जाती एवं 12.42 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति है।

साक्षरता दर 46.95 प्रतिशत है एवं श्रमिक जो कि व्यवसाय में व्यस्त है उनकी दर 42.95 प्रतिशत जिसमें से मुख्य कार्य करने वाले 27.73 प्रतिशत तथा मार्जिनल श्रमिक 15.22 प्रतिशत है। कुल जनसंख्या में से बचे हुए 57.05 प्रतिशत गैर कार्यकर्ता है। क्षेत्र में कुल परिवारों की संख्या 17279 है।

4.0 संभावित पर्यावरणीय प्रभाव एवं न्यूनीकरण उपाय

➤ **वायु पर प्रभाव :-** खनन कि क्रियाओं (ड्रिलिंग, विस्फोटन, लोडिंग, होलेज एवं स्थानान्तरण) द्वारा उत्पन्न मुख्य वायु उत्सर्जन पार्टिकुलेट पदार्थ NO_2 एवं SO_2 है। प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए उचित उपाय किए जायेंगे जैसे परिवहन गतिविधियों के दौरान जल का छिड़काव व सड़को के दोनों तरफ हरित पट्टिका का विकास आदि।

➤ **जल पर्यावरण पर प्रभाव :-** खनन क्षेत्र के बाहर कोई प्रदूषित जल निष्कासित नहीं किया जाएगा। अतः खनन कार्य की वजह से सतही जलाशयों पर कोई प्रमुख प्रभाव नहीं पड़ेगा। भू-क्षेत्र में खनन भू-जल स्तर से उपर किया जायेगा और इसलिए भू-जल पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। खनिज प्रकृति में गैर विषैले हैं। वैचारिक स्तर पर कुल खनन पट्टा क्षेत्र (1236.479 हैक्टेयर) में से 296.22 हैक्टेयर कुल खुदाई क्षेत्र होगा। जिसमें से 26.39 हैक्टेयर पर पुर्नभरण करके वृक्षारोपण किया जाएगा और बचे हुए 269.83 हैक्टेयर पर जलाशय विकसित किया जाएगा।

➤ **ध्वनि का प्रभाव :-** खनन कार्य में ध्वनि उत्पन्न करने वाले मुख्य स्रोत ड्रिलिंग, विस्फोटन एवं चूना पत्थर के स्थानान्तरण के लिए ट्रकों का आवागमन है। विस्फोटन के दौरान कुछ क्षणों के लिए ध्वनि का स्तर बढ़ जाता है परन्तु बेहतर तकनीक का उपयोग करने से वह निर्धारित सीमा में एवं कार्यशील क्षेत्र में ही सीमित रहेगा प्रस्तावित वृक्षारोपण भी आस पास के क्षेत्रों में ध्वनि के फैलाव को कम करेगा।

➤ **भूमि पर्यावरण पर प्रभाव :-** ओपनकास्ट खनन क्रियाएँ पट्टा क्षेत्र के परिदृश्य को बदल सकती है परन्तु आस पास के क्षेत्र की सतह विशेषताओं पर कोई प्रभाव नहीं होगा।

खनन से उत्पन्न शीर्ष मृदा का अलग से ढेर लगाया जायेगा एवं उसका उपयोग पट्टा क्षेत्र में पुर्नभरण एवं वृक्षारोपण के लिये किया जायेगा। खान आयु कि समाप्ति पर कोई भी अपशिष्ट डंप नहीं होगा।

खान आयु कि समाप्ति पर कुल खुदाई क्षेत्र 505.0 हैक्टेयर होगा, जिसमें से 212.0 हैक्टेयर पर पुर्नभरण के कर वृक्षारोपण किया जायेगा जबकि बचे हुए 293.0 हैक्टेयर क्षेत्र पर जलाशय एवं लैगून विकसित किया जाएगा।

5.0 परियोजना के पश्चात् जाँच कार्यक्रम

सारणी – 5

क्र.सं.	विवरण	विश्लेषण की बारबारता
1.	मौसम संबंधी आंकड़े	प्रतिदिन
2.	व्यापक वायु गुणवत्ता परियोजना क्षेत्र में	त्रैमासिक / अर्द्धवार्षिक
3.	जल गुणवत्ता	त्रैमासिक / अर्द्धवार्षिक
4.	ध्वनि स्तर विश्लेषण	त्रैमासिक / अर्द्धवार्षिक
5.	मृदा गुणवत्ता	अर्द्धवार्षिक / वार्षिक
6.	स्वास्थ्य परीक्षण	दिशानिर्देश के अनुसार

6.0 अतिरिक्त अध्ययन :- पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के पत्र क्रमांक संख्या श्र.11015/210/2010-IA&II (M) दिनांक 19 अगस्त 2010 के द्वारा जारी किये गये टर्म्स ऑफ रेफरेंस के अनुसार अतिरिक्त अध्ययन में जैविक अध्ययन, जलीए भु -वैज्ञानिक अध्ययन एवं वर्षा जल संरक्षण योजना, आपदा प्रबंधन योजना सम्मिलित है।

7.0 परियोजना के लाभ :- प्रस्तावित परियोजना गतिविधि से बाजार में सीमेंट की बढ़ती मांग को पुरा करने में मदद मिलेगी और अतः इससे देश के आर्थिक विकास में भी सहायता मिलेगी। एल. आई. पी. एल. अपने अन्य परियोजना स्थलों पर पहले से ही सी. एस. आर. गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल है। आस पास के गांवों में आधारभूत संरचनाओं का विकास, शैक्षणिक सुविधाएँ सृजित करना, स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा महिला सशक्तीकरण, ग्रामीणों के लिये लाभप्रद रोजगार, स्वास्थ्य जागरुकता कार्यक्रम व शल्य चिकित्सा सम्बन्धी शिविर सामाजिक वन्य कार्यक्रमों में सहभागिता आदि कुछ सी. एस. आर. गतिविधियाँ हैं, जो कि कंपनी द्वारा सामाजिक विकास हेतु की जायेगी।

8.0 पर्यावरण प्रबंध योजना

8.1 वायु गुणवत्ता प्रबन्धन

- धूल उत्पादन को कम करने के लिए ड्रिलिंग में शार्प ड्रिल बिट्स का उपयोग किया जाएगा।
- धूल को वायु में फैलने से रोकने के लिए ड्रिलिंग मशीनों में पानी का जल-छिड़काव प्रणाली लगाई जाएगी।
- नियंत्रित विस्फोटन की जाएगी।
- द्वितीय विस्फोटन को रोकने के लिए रॉक ब्रेकर का प्रयोग किया जायेगा।
- कच्ची सड़कों पर जल का छिड़काव किया जाएगा।
- क्रशिंग के दौरान उत्पन्न धूल को एकत्रित करने के लिये क्रि गिंग प्लाट पर बैग फिल्टर्स के साथ डी-डस्टिंग प्रणाली उपलब्ध कराई जायेगी।
- खदान के किनारे, सड़कों के दोनो तरफ क्रि गिंग प्लांट, कार्या गाला आदि के आसपास पौधारोपण व हरित पटिका का विकास किया जाएगा।

8.2 जल गुणवत्ता प्रबंधन

- वर्षा जल को खनन पिट में जाने से रोकने के लिए पिट्स के चारों ओर गारलैण्ड ड्रेन बनाये जायेंगे ।
- घरेलू अपशिष्ट का निश्कासन करने के लिए सेप्टिक टैंक एवं सोक पिट उपलब्ध करवाए जाएंगे।
- वर्षा जल को माइन सम्प में (नीचें की बेंचों में) एकत्रित किया जाएगा।

8.3 ध्वनि प्रबन्धन

- ध्वनि स्तर को कम करने के लिये ड्रिलिंग, शार्प ड्रिल बिट्स के द्वारा की जाएगी
- कम्पन को कम करने के लिए नियंत्रित विस्फोटन किया जायेगा।
- द्वितीयक विस्फोटन को रोकने के लिए रोक ब्रेकर्स का उपयोग किया जाएगा।
- मशीनों के पास काम करने वाले सभी संचालकों एवं कर्मचारियों को इयर प्लग/इयर मफ्स उपलब्ध कराये जायेंगे।
- ध्वनी उत्पादन को कम करने के लीए एक निश्चित अन्तराल पर मशीनों का उचित रखरखाव, आइलिंग एवं ग्रीसिंग की जायेगी
- ध्वनि के प्रसार को कम करने के लिए वृक्षारोपण किया जाएगा।
- आवधिक ध्वनि गुणवत्ता निरीक्षण आवधिक किया जायेगा।

8.4 ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन

शीर्ष मृदा के अलावा कोई भी ठोस व्यर्थ उत्पन्न नहीं होगा। प्रथम पाँच वर्षों में लगभग 1526453 क्यूबिक मीटर शीर्ष मृदा उत्पन्न होगी जिसका पिट संख्या 1 एवं 2 के एवं पिट संख्या 3 के अस्थायी रूप से ढेर लागाया जायेगा

प्रथम पाँच वर्षों के पश्चात पट्टे के अंत तक लगभग 2.92 मिलियन क्यूबिक मीटर एवं पट्टे की अवधि के बाद से खान आयु की समाप्ति तक लगभग 2.1 मिलियन क्यूबिक मीटर शीर्ष मृदा उत्पन्न होगी। प्रथम पाँच वर्षों के पश्चात, उत्पन्न शीर्ष मृदा को पुर्नभरण में प्रयोग किया जायेगा।

8.5 भूमि उपयोग पैटर्न का प्रबंधन :-

खनन प्रक्रिया खनन पट्टा क्षेत्र के वर्तमान परिदृश्य को प्रभावित करेगी। खनन पट्टा क्षेत्र की वास्तविक टोपोग्राफी खनन कार्य के कारण मुख्य रूप से प्रभावित होगी। कुल पट्टा क्षेत्र 1236.479 हैक्टेयर है। खान आयु की समाप्ति पर कुल खुदाई क्षेत्र 296.22 हैक्टेयर होगा, जिसमें 26.39 हैक्टेयर पर पुर्नभरण कर वृक्षारोपण किया जाएगा एवं बचे हुए 269.83 हैक्टेयर क्षेत्र को जलाशय एवं लगून में विकसित किया जायेगा।

8.6 हरित पट्टिका विकास एवं पौधारोपण कार्यक्रम

1236.479 हैक्टेयर कुल खनन क्षेत्र में से 43.39 हैक्टेयर पर पौधारोपण व हरित पट्टिका का विकास किया जाएगा। खान आयु की समाप्ति पर विभिन्न स्थानों जैसे पुर्नभरण क्षेत्र, पिट एवं रोड के चारों ओर हरित पट्टिका तथा गैर खनिज क्षेत्रों में लगभग 65085 वृक्ष (1500 वृक्ष प्रति हैक्टेयर के दर पर) लगाए जाएंगे।

8.7 सामाजिक-आर्थिक पर्यावरण

बेहतर शिक्षा सुविधाएँ, उचित स्वास्थ्य सेवा, सड़को की आधारिक संरचना एवं पीने के पानी की सुविधाएँ इत्यादि किसी भी इंसान के बेहतर जीवन स्तर के लिए आधारभूत सामाजिक सुविधाएँ हैं। एल. आई. पी. एल. इस क्षेत्र में उपरोक्त सुविधाओं को या तो उपलब्ध करवायेगा या इन सुविधाओं में सुधार लायेगा, जिससे स्थानीय समुदायों के जीवन स्तर के उत्थान में मदद मिलेगी।

9.0 निष्कर्ष

परिचर्चा के अनुसार यह कहना उचित है कि परियोजना से इस क्षेत्र में पारिस्थितिकी पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा, क्योंकि सभी प्रदूषकों को नियंत्रण में रखने के लिए विभिन्न व्यापक उपाय किये जायेंगे।

क्षेत्र के चारों ओर हरित पट्टिका का विकास प्रभावी प्रदूषण नियंत्रित तकनीक के रूप में किया जायेगा तथा प्रस्तावित चूना पत्थर खान की परिसीमा में निकलने वाले प्रदूषकों को भी नियंत्रित करेगा।

